संस्कृत नोट्स

सत्र – 2016 – 17

कक्षा – सप्तम्

षष्ठः पाठः (सुवचनानि)

1. विद्या विवादाय ..... चरक्षणाय ।। 1 ।।

अर्थ :– संसार में दो तरह के लोग होते है – सज्जन और दूसरा दुर्जन। दुर्जन व्यक्ति विद्या पाकर विवाद करता है, धन पा कर घमण्ड करता है तथा शक्ति पाकर दूसरों को परेशान करता है। ठीक इसके विपरीत सज्जन व्यक्ति विद्या पाकर दूसरों को बाँटता है, धन पाकर दान करता है और शक्ति पाकर दूसरों की रक्षा करता है। यही सज्जन और दुर्जन में अन्तर होता है।

2. अयं निज ..... कुटुम्बकम् ।। 2 ।।

अर्थ :– यह मेरा है, यह पराया है, ऐसी गणना करने वाले लोग छोटे दिल के होते हैं। बड़े दिल वालों के लिऐ तो पूरी पृथ्वी ही उसका परिवार होती है।

3. महाजनस्य संसर्ग ..... फलश्रियम् ।। 3 ।।

अर्थ :– महान लोगो का साथ भला किसके लिऐ उन्नति कारक नहीं होता अर्थात्सज्जन लोगों का साथ सबके लिये उन्नति कारक होता है। जैसे कमल के पत्ते पर पड़ी जल की बूँद (ओस) मोती का रूप धारण कर लेती है।

4. को भारः समर्थानां ..... प्रियवादिनाम् ।। 4 ।।

अर्थ :– समर्थ व्यक्ति के लिये कोई कार्य भार नहीं होता, व्यापारी के लिये कोई स्थान दूर नहीं होता। विद्वान व्यक्ति के लिये कोई भी स्थान विदेश तुल्य नहीं होता, ठीक वैसे ही प्रिय बोलने वाले के लिये कोई पराया नहीं होता है।

उद्देश्य :– विभिन्न श्लोकों के माध्यम से दी गई नीतिगत शिक्षा से छात्र परिचित होंगे।

कठिन शब्दाः –

मदाय = घमण्ड के लिये।	परेषाम् = दूसरों के ।	परिपीड़नाय = सताने के लिये।
खलस्य = दुष्ट का।	निजः = अपना।	परः = पराया।
संसर्ग = साथ।	धत्ते = धारण करता है।	

व्याकरण :–

वसुधैव = वसुधा + एव = वृद्धि सन्धि।

नोन्नतिकारकः = न + उन्नतिकारकः = गुण सन्धि।

सप्तमः पाठः (बुद्धि एव उत्तमा)

1. एक किसी नगर में चालाक आदमी रहता था।
2. वह विद्या से युक्त परन्तु ठग था।
3. वह अनेक प्रकार से लोगो को ठगकर धन एकत्र करता था।
4. उसके घर एक बहुमूल्य (कीमती) सोने का पात्र था।
5. एक बार उसने एक उपाय सोचा।
6. उसने सब जगह घोषणा की कि – जो कोई भी एक नई कथा सुनाऐगा, उसको मैं यह सोने का पात्र दूँगा। किन्तु यदि वह कथा मेरे द्वारा पहले सुनी हुई होगी तो तब वह मुझे पाँच सौ सोने की मुद्रा देगा
7. इस बात को सुनकर बहुत सारे लोग सोने के पात्र के लोभ में उसके घर आए और पहले नहीं सुनी हुई कथा सुनाने लगे।
8. परन्तु प्रत्येक कथा सुनकर वह अन्त में बोलता – "यह कथा मैनें पहले भी सुनी है।"
9. निराश हो कर वे लोग उसे पाँच सौ सोने की मुद्रा देकर चले जाते थे।
10. इस प्रकार उसने अनेक स्वर्ण मुद्राएँ एकत्र की।
11. एक बार एक बुद्धिमान बालक यह बात सुनकर उसके पास गया और कथा सुनाने के लिये तैयार हुआ
12. चालाक आदमी ने उससे कहा – क्या आप जानते हैयदि कथा मेरे द्वारा पहले सुनी गई होगी तो आप मुझे पाँच सौ सोने की मुद्रा दोगे।
13. बालक बोला – हाँ, मैं जानता हूँ। ऐसा कहकर उसने कथा शुरू की।
14. आपको याद है कि आपके पिता ने मेरे पिता से पाँच लाख सोने की मुद्रा ली थी। यदि कथा आपने पहले सुनी है तो पाँच लाख साने की मुद्रा मुझे दो और यदि नहीं सुनी है तो यह सोने का बर्तन मुझे दे दो।
15. उस ठग ने अपनी हार स्वीकार कर के सोने के पात्र सहित सोने की मुद्रा भी बालक को दे दी।

    सत्य ही माना जाता है कि – "बुद्धि ही उत्तम है।"

कठिन शब्दाः –

चतुरः = चालाक।	वंचक् = ठग ।	गृहे = घर पर।
पंचलक्ष = पाँच लाख।	मह्यम = मुझे।	तर्हि = तो।

व्याकरण :–

करोति = करता है।	करोति स्म = करता था।
गच्छन् = गऐ।	आगच्छन् = आए (आ + गच्छन्)।

अष्टमः पाठः (अविवेकः परम्–आपदां पदम्)

1. एक किसी तालाब में बहुत सारी मछलियाँ रहती थीं।
2. तालाब के किनारे दो हंस और एक कछुआ रहते थे।
3. एक बार कुछ मछुआरे वहाँ आए।
4. सरोवर को देखकर वे आपस में बोले – "यहाँ तो बहुत सारी मछलियाँ एवं कछुए हैं।"
5. एक मछुआरा – "मैं कल यहाँ जरूर आऊँगा।" दूसरा – मैं भी आऊँगा। तीसरा – हाँ, मैं भी। हम– मछलियों और कछुए को जाल में बांध कर ले जाऐंगे। (कछुआ उनकी बातें सूनता है।)
6. मछुआरों की बातें सुनकर भयभीत कछुआ मित्रों के पास जाता है।
7. कछुए ने सारी बातें हंसों से कही और सहायता के लिये प्रार्थना की।
8. हंस बोले – क्या करना चाहिए।
9. कछुए ने कहा – आप दोनो मुझे आकाश मार्ग से ले चलो।
10. (विचार करके) एक हंस बाला – हम दोनों लकड़ी की सहायता से कछुए को दूसरी जगह ले जाऐंगे।
11. हंस ने कछुए से कहा– हम दोनों आपकी सहायता करेंगे, परन्तु तुम रास्ते में कुछ नहीं बोलोगे। कछुए ने कहा – हाँ, ठीक है।
12. हंसो ने कछुए को डण्डे से धारण करके आकाश में उड़ चले।
13. आकाश में यह दृश्य देख कर लोग शोर करने लगे।
14. शोर सुनकर कछुआ भी कुछ बोलने को तैयार हुआ। तभी वह नीचे गिर गया।
15. इसलिये ठीक ही कहा गया है – "बिना विचारे कार्य नहीं करना चाहिए।''

उद्देश्य :– छात्र जानेंगे कि हमेशा विचार करके ही कार्य करना चाहिऐं।

कठिन शब्दाः –

बहवः = बहुत सारे।	एकदा = एक बार।	केचन = कुछ।
बद्ध्वा = बाँधकर।	श्वः = आने वाला कल।	ह्य (ह्य) = बीता हुआ कल।
लगुडेन = डण्डे से।	उद्यतः = तैयार।	परम् = परन्तु।

व्याकरण :–

बद् + क्त्वा = बद्ध्वा = बाँध कर के।

धृ + क्त्वा = धृत्वा = धारण करके।

दृश + क्त्वा = दृष्ट्वा = देखकर के ।

वच् + तुमुन् = वक्तुम् = बोलने के लिये।

नवमः पाठः (बुद्धिमान् गोपालकः)

1. एक चित्रकार था।
2. चित्र निर्माण में उसकी बहुत रूचि थी।
3. जहाँ – जहाँ वह सुन्दर दृश्य देखता था, वहाँ – वहाँ वह चित्र निर्माण करता था।
4. एक बार वह नगर के बाहर गया।
5. वहाँ पर पर्वतों के पीछे से सूर्य की सुनहरी किरणें वातावरण को सुनहरा कर रही थी।
6. यह सुन्दर दृश्य देखकर उसने पर्वत प्रदेश पर चढ़कर चित्र बनाना शुरू कर दिया।
7. जब चित्र पूर्ण हुआ तब उसने कभी बायेँ से कभी दायें से कई बार चित्र को देखा।
8. उसमें लीन वह अपनी स्थिति भूल गया।
9. वहाँ एक गोपाल गायों को चरा रहा था।
10. उसने चित्रकार को पहाड़ के कोने पर स्थित देखा।
11. गोपाल ने सोचा – "यदि यह चित्रकार एक कदम भी पीछे चलता है तो वह पर्वत से नीचे गिर जाएगा।"
12. यदि वह चित्रकार को बुलाता है, तब भी ध्यान भंग होने से वह गिर जाएगा। तब क्या करना चाहिये ?
13. अचानक कुछ विचार कर वह पर्वत के ऊपर गया और उस सुन्दर चित्र को फाड़ना शुरू कर दिया।
14. यह देख कर चित्रकार क्रोधित हो कर गोपाल की ओर दौड़ा।
15. गोपाल ने कहा – मैंने तुम्हारे चित्र को छिन्न (फाड़ा) किया, परन्तु मैंने तुम्हारा जीवन बचाया।
16. यह जानकर चित्रकार ने गोपाल को धन्यवाद किया। गोपाल के विवेक से ही चित्रकार का जीवन बचा।

उद्देश्य :– छात्र जानेंगे कि हम विवेक से ही किसी के जीवन को बचा सकते हैं।

कठिन शब्दाः –

अतीव = ज्यादा।	पृष्ठात् = पीछे से।	वामतः = बायें से
कदाचित् = कभी।	दक्षिणतः = दाँयी ओर से।	कोणे = कोने पर।
आह्वयति = बुलाता है।	छिन्नम् = फाड़ना।	स्वर्णरश्मयः = सुनहरी किरणें।

व्याकरण :–

भूत्वा = भू + क्त्वा = हो कर के।

दशमः पाठः (मधुरवचनानि)

1. नरस्याभरणं ..... क्षमा ।। 1 ।।

अर्थ :– सुन्दरता व्यक्ति का आभूषण है। सुन्दर अर्थात् रूप का आभूषण गुण है। गुण का आभूषण ज्ञान है। ज्ञान का क्षमाशीलता है।

2. हस्तस्य भूषणं ..... स्वर्णस्य भूषणम् ।। 2 ।।

अर्थ :– हाथ का आभूषण दान है। कण्ठ का आभूषण सत्य बोलना है। कानों का आभूषण शास्त्र हैं। इनके आगे सोने के आभूषण व्यर्थ है।

3. यथैकेन न ..... कर्मणः भवेत् ।। 3 ।।

अर्थ :– जैसे एक हाथ से ताली नहीं बजती है, वैसे ही परिश्रम त्यागने (छोड़ने) पर कार्य सफल नहीं होता है।

4. यस्य नास्ति ..... किम् करिष्यति ।। 4 ।।

अर्थ :– जिसके पास अपनी स्वयं की बुद्धि नहीं होती, उसका शास्त्र भी भला नहीं कर सकता। जैसे आँखों से विहीन (अन्धे) व्यक्ति के लिये दर्पण कुछ नहीं कर सकता है।

5. विद्या ददाति ..... ततः सुखम् ।। 4 ।।

अर्थ :– विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से पात्रता अर्थात् योग्यता प्राप्त होती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है और धन धर्म के कार्य सम्पन्न करता है और धर्म के बढ़ने से व्यक्ति को सुख की प्राप्ति होती है।

उद्देश्य :– विभिन्न श्लोकों के माध्यम से छात्र नीतिगत शिक्षा प्राप्त करेंगे।

कठिन शब्दाः –

उद्यमम् = परिश्रम को।	परित्यज्य = छोड़कर।	प्रज्ञा = बुद्धि।
लोचनाभ्याम् = आँखों से।	याति = प्राप्त होती है।	पात्रताम् = योग्यता को।
आप्नोति = प्राप्त करता है।		

व्याकरण :–

नरस्य + आभरणम् = नरस्याभरणम् = दीर्घ सन्धि।
यथा + एकेन = यथैकेन = वृद्धि सन्धि
तथा + उद्यमम् = तथौद्यमम् = गुण सन्धि।
न + अस्ति = नास्ति = दीर्घ सन्धि।

।। इति ।।